संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२३ ● अंक १७ ● २४ अप्रैल २०१८ बैसाख शुक्ल पक्ष नवमी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १६४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा सम्पन्न–

सभा के नियन्त्रण में ही आर्य समाज कर सकेगें विवाह संस्कार– डॉ० धीरज सिंह आर्य, सभा प्रधान

प्रत्येक आर्य समाज अपने यहाँ लगायें आर्य वीर दल की शाखायें– धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, सभा मंत्री

रविवार २२ अप्रैल २०१८ को म० नारायण स्वामी भवन सभा कार्यालय में आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा श्री डा० धीरज सिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई सर्वप्रथम सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती के ब्रह्महत्व में यज्ञशाला में यज्ञ सम्पन्न हुआ मुख्य यजमान सभा प्रधान डा० धीरज सिंह आर्य एवं श्री नरेन्द्र आर्य–सुदेश आर्या स्याना–बु० शहर रही जो सभा उप प्रधाना भी हैं प्रदेश से आये हुए समस्त सदस्यों एवं अधिकारियों ने यज्ञ में आहुतियां प्रदान की तत्पश्चात् अन्तरंग सभा ईश प्रार्थना के मंत्रोच्चारण के पश्चात् गतकार्यवाही पढ़कर सर्व सम्मति से पास की गई विभिन्न विषयों पर गहनता से विचार विमर्श एवं चिन्तन किया गया मुख्य रूप से सभा प्रधान डा० धीरज सिंह आर्य ने अपने वक्तव्य में सम्बोधन करते हुए वर्तमान में आर्य समाज मन्दिरों में हो रहे विवाह संस्कारों पर दुःख प्रकट किया कि लोग अर्थ लोलुपता में पूर्ण रूपेण नियमों का पालन नहीं कर पाते हैं सभा के द्वारा प्रकाशित एवं प्रमाणित प्रमाण पत्र द्वारा ही विवाह संस्कार मान्य होगें तथा सभा कार्यालय से ही प्रदान किये जायेगें जिसका पंजीकरण मान्य होगें तथा सभा कार्यालय से ही प्रदान किये जायेगें जिसका पंजीकरण शुल्क ५०० /– सर्व सम्मति से निश्चित किया गया। आर्य समाजों में चल रहे विवादों के समाधान के लिए सभा प्रधान जी ने प्रत्येक जिसमें पृथक् से निरीक्षक/संयोजक शराब बन्दी आन्दोलन/अन्तरंग सभा सदस्य जिला सभा के प्रधान अथवा मंत्री को साथ लेकर निरीक्षक करेगें तथा अपनी आख्या सभा कार्यालय में प्रस्तुत करेगें जिस पर सभाप्रधान जी/मंत्री जी का निर्णय समाधान के लिए पर्याप्त रहेगा एक सकारात्मक वातावरण भी बनेगा आर्य समाज की भावी पीढ़ी को तैयार करने के लिए प्रत्येक जिले में ग्रीष्म कालीन अवकाश का लाभ लेते हुए आर्यवीर दल के शिविर आयोजित किये जाये तथा प्रत्येक आर्य समाज में आर्यवीर दल की शाखाओं के माध्यम से हम अपने पुत्र/पुत्रियों को शारीरिक आत्मिक–बौद्धिक उन्नति के लिए पुरूषार्थ करेगें और उसे अनिवार्य समझकर अपने कर्त्तव्य का पालन करेगें ऐसा विचार सभामंत्री जी ने सदन में बताया इस पर डा० सर्वेश आर्य–औरय्या, डा० विवके आर्य–हमीरपुर, देवी सिंह आर्य–झांसी, रमेश सिंह एडवोकेट– मुराबदाबाद, धर्मवीर आचार्य बागपत, आर्य वीरांगना शिविर एवं खुर्जा बु०शहर में भी आर्य वीरांगना शिविर लगाने की योजना है ऐसा सभा प्रधान जी ने बताया कि हम शिविर का आयोजन कर रहे हैं तथा आर्यजनता से आर्यवीर भेजने तथा समापन पर सभी अतिथियों का निमन्त्रंण भी प्रस्तुत किया। हरदोई में आर्य समाज के प्रधान रहे पूर्व प्राचार्य वैदिक विद्वान् श्री वंशीधर शुक्ल जी द्वारा लिखित पुस्तिका "हितं मनोहारि च दुर्लभंवच" का विमोचन किया गया विमोचन करते हुए वैदिक कवि विद्वान एवं सभा उप प्रधान श्री वीरेन्द्र रत्नम् जी ने कहा कि आज पूरे विश्व में महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को प्रचारित करने की आवश्यकता है विश्व में जो भयावाह स्थिति है उसे दूर करने के लिए आर्य समाज को ही आगे आना पड़ेगा हितकारी बात के वक्ता भी और श्रोता भी आज समाज में दुर्लभ हैं श्री शुक्ला जी ने यह परचक लिखकर इसे सिद्ध किया है हम सभा की ओर से उनको अभिनन्दन करते हैं सभा प्रधान जी का विशेष धन्यवाद करते हुए उन्होंने अपना उद्बोधन दिया सभा उपप्रधान ज्ञानेन्द्र गांधी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के कार्यों को जन आन्दोलन के बिना पूरा नहीं किया जा सकता उसके लिए आप समर्पण भाव से तैयारी करें तथा आर्य सामज की सम्पत्ति की सुरक्षा का संकल्प लेकर जायें इसमें प्रार्थी के साथ किसी भी प्रकार का समझौता बर्दाश्त नहीं होगा सराय तरीन प्रकरण पर आपने अपने विचार प्रकट करते हुए उसका दायित्यव अपने सहर्ष स्वीकार किया। आर्य समाज बागपत के प्रकरण को भी गम्भीरता से लेते हुए सभाप्रधान जी ने स्वयं निस्तारण करने का पूर्ण आश्वासन प्रदान किया, बैठक में श्री मा० ज्ञानेन्द्र सिंह सभा उपमन्त्री, श्री ज्ञानेन्द्र सिंह सभा सह.कोषाध्यक्ष, श्री राजीव रंजन सभा उपप्रधान, गिरिजा त्रिपाठी सभा उपमंत्री, डा० विवेक आर्य हमीरपुर, श्री डोरी लाल आर्य, सुनील कुमार आर्य दयाशंकर आर्य सम्भल, श्री तेजपाल सिंह मा०, प्रहलाद वर्मा ने अपने विचार प्रकट किये। वैदिक विद्वान् आचार्य नगेन्द्र जी प्राचार्य गुरूकुल अयोध्या का स्वागत किया गया श्रीमती माता विद्यावती वती जी चन्दौली का भी स्वागत किया गया। भग्गडवा

शेष पृष्ठ ६ पर

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती का सपना हो रहा है साकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती का सपना आज सकार हो रहा है खेल क्षेत्र में भी महिलाओं ने अपनी क्षमता का लोहा मनवा साबित कर दिखाया है कि वे भी किसी से भी किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। आस्ट्रेलिया के गोल्ड कोस्ट में सम्पन्न हुए राष्ट्रमण्डल खेलों में भारत ६६ पदकों के साथ तीसरे स्थान पर रहा। भारत का प्रर्दशन युवा खिलाड़ियों और महिलाओं का बेहद उल्लेखनीय रहा। निशाने बाजी में ७ स्वर्ण समेत १६ पदक, कुश्ती में ५ स्वर्ण सहित १२ मेडल, भारोत्तोलन में ५ स्वर्ण समेत ६ पदक, मुक्केबाजी में ३ स्वर्ण सहित ६ पदक, टेबुल टेनिस में ३ स्वर्ण समेत ८ पदक, बैडमिंटन में २ स्वर्ण समेत ६ पदक, एथलेटिक्स में १ स्वर्ण समेत ३ पदक भारतीय खिलाड़ियों कि प्रतिभा क्षमता का बेमिशाल सबूत हैं। निशानेबाजी में १५ साल के अनीश भानवाल और १६ साल की मनुभाकर ने स्वर्ण पदक जीत कर भारतीय खेल में युवा प्रतिभाओं की धमाकेदार मौजूदगी दर्ज कराई है, वहीं मनिका बन्ना सबसे सफल भारतीय खिलाड़ी के रूप में उभर कर सामने आयीं है, जिन्होंने टेबिल टेनिस में महिला एकल और टीम स्पर्धा में स्वर्ण जीता। महिला युगल और मिश्रित युगल स्पर्धा में कांस्य जीत कर सभी प्रतिस्पर्धाओं में पदक जीतने का दुर्लभ कीर्तिमान बनाया।

ऐसे ही मीरा बाई चानू संगीता चानू, पूनम यादव, हीना सिद्ध, तेजस्वनी, श्रेयसी सिंह, विनेश फोगार्ड, आदि ने भारतीय खेलों में स्त्री शक्ति के वर्चस्व को प्रमुखता के साथ रेखांकित किया है। सुशील कुमार, मैरीकॉम, और साइना नेहवाल के स्वर्ण पदकों ने बताया कि उनके अनुभवों का अब भी कोई मुकाबला नहीं है। भारत न केवल बैडमिंटन के पुरूष और महिला एकल के फाइनल में पहुंचा, बल्कि महिला एकल में दो बेहतरीन खिलाड़ियों साइना नेहवाल और पी.वी. सिन्धु के बीच भिड़त से साबित हुआ कि इस खेल में भारत निरन्तर ताकत बनता जा रहा है।

पुरूष फाइनल में किदंबी श्रीकान्त ने हारने के बावजूद शानदार प्रर्दशन किया है। इन खेलों में दबदबे के बीच राष्ट्रीय खेल हाँकी में पुरूष और महिला दोनों टीमों का खाली हाथ लौटना हमें हताश करने वाला है। सिरिंज विवाद से शुरूआत के बाद आखिर में साइना नेहवाल के पिता का खेलगांव में न पहुंच पाने का मामला भी हमारे खेल अधिकारियों के लिए सबक होना चाहिए।

इसी तरह आस्ट्रलिया और इंग्लैण्ड की तुलना में पदकों का फर्क बताता है कि हमें अभी लम्बा रास्ता तय करना है। इसके बावजूद गोल्ड कोस्ट में हमारे खिलाड़ियों की उपलब्धि ने देश को गौरवान्वित किया है। राष्ट्रमण्डल खेलों में महिला खिलाड़ियों के शानदार प्रर्दशन से हमारे समाज को महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये रास्ते पर चलने के लिए प्रेरणा मिलती है। उन्होंने ने ही सबसे पहले महिला अधिकारों को लेकर अपनी आवाज, उठायी थी। उन्होंने ने ही अपने जीवन काल में महिलाओं से सम्बन्धित कई कुप्रथाओं पर विराम लगवा दिया था। महिलाओं को शिक्षा का अधिकार भी स्वामी दयानन्द की ही देन है।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ षष्ठ समुल्लासारम्भः

अथ राजधर्मान् वक्ष्यामः

राजसभासद् और मन्त्री कैसे होने चाहिये-

मौलान् शास्त्रविदः शूरांल्लब्धलक्ष्यान् कुलोद्गतान्। सचिवान् सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षितान्।।१।।
अपि यत् सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम्। विशेषतोऽसहायेन किन्तु राज्यं महोदयम्।।२।।
तैः सार्द्धं चिन्तयेन्नित्यं सामान्यं सन्धिविग्रहम्। स्थानं समुदयं गुप्तिं लब्धप्रशमनानि च।।३।।
तेषां स्वं स्वमभिप्रायमुपलभ्य पृथक्-पृथक्। समस्तानाञ्च कार्य्येषु विदध्याद्धितमात्मनः।।४।।
अन्यानपि प्रकुर्वीत शुचीन् प्रज्ञानवस्थितान्। सम्यगर्थसमाहर्तृन् अमात्यान् सुपरीक्षितान्।।५।।
निवर्त्तेतास्य यावद्भिरितिकर्तव्यता नृभिः। तावतोऽतन्द्रितान् दक्षान् प्रकुर्वीत विचक्षणान्।।६।।
तेषामर्थे नियुञ्जीत शूरान् दक्षान् कुलोद्गतान्। शुचीन् आकरकर्मान्ते भीरून् अन्तर्निवेशने।।७।।
दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम्। इङ्गिताकारचेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतम्।।८।।
अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान् देशकालवित्। वपुष्मान्वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते।।९।। मनु०।।

स्वराज्य स्वदेश में उत्पन्न हुए, वेदादि शास्त्रों के जानने वाले, शूरवीर जिन का लक्ष्य अर्थात् विचार निष्फल न हो और कुलीन, अच्छे प्रकार सुपरीक्षित, सात वा आठ उत्तम धार्मिक चतुर 'सचिवान्' अर्थात् मन्त्री करे।।१।।

क्योंकि विशेष सहाय के बिना जो सुगम कर्म है वह भी एक के करने में कठिन हो जाता है, जब ऐसा है तो महान् राज्यकर्म एक से कैसे हो सकता है? इसलिये एक को राजा और एक की बुद्धि पर राज्य के कार्य का निर्भर रखना बहुत ही बुरा काम है।।२।।

इस से सभापति को उचित है कि नित्यप्रति उन राज्यकर्मों में कुशल विद्वान् मन्त्रियों के साथ सामान्य करके किसी से (सन्धि) मित्रता किसी से (विग्रह) विरोध (स्थान) स्थिति समय को देख के चुपचाप रहना, अपने राज्य की रक्षा करके बैठे रहना (समुदयम्) जब अपना उदय अर्थात् वृद्धि हो तब दुष्ट शत्रु पर चढ़ाई करना (गुप्तिम्) मूल राजसेना कोश आदि की रक्षा (लब्धप्रशमनानि) जो-जो देश प्राप्त हो उस-उस में शान्तिस्थापन उपद्रवरहित करना इन छः गुणों का विचार नित्यप्रति किया करे।।३।।

विचार से करना कि उस सभासदों का पृथक्-पृथक अपना-अपना विचार और अभिप्राय को सुनकर बहुपक्षानुसार कार्यों में जो कार्य अपना और अन्य का हितकारक हो वह करने लगना।।४।।

अन्य भी पवित्रात्मा, बुद्धिमान्, निश्चितबुद्धि, पदार्थों के संग्रह करने में अतिचतुर, सुपरीक्षित मन्त्री करे।।५।।

जितने मनुष्यों से कार्य सिद्ध हो सके उतने आलस्यरहित बलवान् और बड़े-बड़े चतुर प्रधान पुरूषों को (अधिकारी) अर्थात् नौकर करे।।६।।

इन के आधीन शूरवीर बलवान् कुलोत्पन्न पवित्र भृत्यों को बड़े-बड़े कर्मों में और भीरू डरने वालों को भीतर के कर्मों में नियुक्ति करे।।७।।

जो प्रशंसित कुल में उत्पन्न चतुर, पवित्र, हावभाव और चेष्टा से भीतर हृदय और भविष्यत् में होने वाली बात को जाननेहारा सब शास्त्रों में विशारद चतुर है, उस दूत को भी रक्खे।।८।।

वह ऐसा हो कि राज काम में अत्यन्त उत्साह प्रीतियुक्त, निष्कपटी, पवित्रात्मा, चतुर, बहुत समय की बात को भी न भूलने वाला, देश और कालानुकूल वर्तमान का कर्त्ता, सुन्दर रूपयुक्त निर्भय और बड़ा वक्ता हो, वही राजा का दूत होने में प्रशस्त है।।९।। किस-किस को क्या-क्या अधिकार देना योग्य है-

अमात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी किया। नृपतौ कोशराष्ट्र च दूते सन्धिविपर्ययौ।।१।।
दूत एव हि सन्धत्ते भिनत्तेव च संहतान्। दूतस्तत्कुरूते कर्म भिद्यन्ते येन वा न वा।।२।।
बुद्ध्वा च सर्वं तत्त्वेन परराजचिकीर्षितम्। तथा प्रयत्नमातिष्ठेद्यथात्मानं न पीडयेत्।।३।।
धनुर्दुर्गं महीदुर्गमब्दुर्गं वार्क्षमेव वा। नृदुर्गं गिरिदुर्गं वा समाश्रित्य वतेत्पुरम्।।४।।
एकः शतं योधयति प्राकारस्थो धनुर्धरः। शतं दशसहस्राणि तस्मादृ दुर्गं विधीयते।।५।।
तत्स्यादायुधसम्पन्नं धनधान्येन वाहनैः। ब्राह्मणैः शिल्पिभिर्यन्त्रैर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेन च ।।६।।
तस्य मध्ये सुपर्याप्तं कारयेद् गृहमात्मनः। गुप्तं सर्वर्तुकं शुभ्रं जलवृक्षसमन्वितम्।।७।।
तदध्यास्योद्वहेद्भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्।। कुले महति सम्भूतां हृद्यां रूपगुणान्विताम्।।८।।
पुरोहितं प्रकुर्वीत वृणुयादेव चर्त्विजम्। तेऽस्य गृह्याणि कर्माणि कुर्य्युर्वैतानिकानि च।।९।। मनु०।।

अमात्य को दण्डाधिकार, दण्ड में विनय क्रिया अर्थात् जिस से अन्यायरूप दण्ड न होने पावे, राजा के आधीन कोश और राजकार्य्य तथा सभा के आधीन सब कार्य्य और दूत के आधीन किसी से मेल वा विरोध करना अधिकार देवे।।१।।

दूत उस को कहते हैं जो फूट में मेल और मिले हुए दुष्टों को फोड़ तोड़ देवे। दूत वह कर्म करे जिससे शत्रुओं में फूट पड़े।।२।।

वह सभापति और सब सभासद् वा दूत आदि यथार्थ से दूसरे विरोधी राजा के राज्य का अभिप्राय जान के वैसा यत्न करे कि जिस से अपने को पीड़ा न हो।।३।।

इसलिये सुन्दर जंगल, धन धान्ययुक्त देश में (धनुर्दुर्गम्) धनुर्धारी पुरूषों से गहन (महीदुर्गम) मट्टी से किया हुए (अब्दुर्गम्) जल से घेरा हुआ (वार्क्षम्) अर्थात् चारों ओर वन (नृदुर्गम्) चारों ओर सेना रहे (गिरिदुर्गम्) अर्थात् चारों ओर पहाड़ों के बीच में कोट बना के इस के मध्य में नगर बनावे।।४।।

और नगर के चारों ओर (प्राकार) प्रकोट बनावे, क्योंकि उस में स्थित हुआ एक वीर धनुर्धारी शस्त्रयुक्त पुरूष सौ के साथ और सौ दश हजार के साथ युद्ध कर कर सकते हैं इसलिये अवश्य दुर्ग का बनाना उचित है।।५।।

वह दुर्ग शस्त्रायुक्त पुरूष सौ के साथ और सौ दश हजार के साथ युद्ध कर सकते हैं इसलिये अवश्य दुर्ग का बनाना उचित है।।५।।

वह दुर्ग शस्त्रास्त्र, धन, धान्य, वाहन, ब्राह्मण जो पढ़ाने के उपदेश करने हारे हों (शिल्पी) कारीगर, यन्त्र, नाना प्रकार की कला, (यवसेन) चारा घास और जल आदि से सम्पन्न अर्थात् परिपूर्ण हों।।६।।

उसके मध्य में जल वृक्ष पुष्पादिक सब प्रकार से रक्षित सब ऋतुओं में सुखकारक श्वेतवर्ण अपने लिए घर जिसमें सब राजकार्य का निर्वाह हो वैसा बनवावे।।७।।

इतना अर्थात् ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़ के यहां तक राजकाम करके पश्चात् सौन्दर्य रूप गुणयुक्त हृदय को अतिप्रिय बड़े उत्तम कुल में उत्पन्न सुन्दर लक्षणयुक्त अपने क्षत्रियकुल की कन्या जो कि अपने सदृश विद्यादि गुण कर्म स्वभाव में होउस एक ही स्त्री के साथ विवाह करे दूसरी सब स्त्रियों को अगम्य समझ कर दृष्टि से भी न देखें।।८।।

पुरोहित और ऋत्विज् का स्वीकार इसलिये करे के वे अग्निहोत्र और पक्षेष्टि आदि सब राजघर के कर्म किया करें और आप सर्वदा राजकार्य में तत्पर रहै अर्थात यही राजा का सन्ध्योपासनादि कर्म है जो रात दिन राजकार्य में प्रवृत्त रहना और कोई राजकर्म बिगड़ने न देना।।९।।

क्रमशः

धरोहर...

ऐसा हो परिवार हमारा

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ
संचालक–गुरूकुल पूठ, हापुड़
मो० ६८३७४०२१६२

हम अपने परिवार को सुन्दर आदर्श परिवार बनाना चाहते हैं लेकिन आदर्श परिवार बनाने के लिए हमें क्या–क्या भूमिका निभानी होती है इसका परिज्ञान न होने से हम उसमें सफलता प्राप्त नहीं कर पाते अतः हमारे ऋषि मुनियों के साधना करके हमारे लिए जो अनुभवों का संदेश दिया वही हमारे लिए वरदान बन गया है अतः हम प्राचीन काल के ऋषियों के सदैव ऋणी रहेंगे उनका ऋण उतारने के लिए हमें वेदों शास्त्रों का पठन–पाठन करके उसके आधार पर अपना आचरण करना होगा फिर आप अनुभव करेंगे कि हमारे परिवार में कितना परिवर्तन प्रारम्भ हो गया है आपस में हमारा व्यवहार रहन–सहन कैसा हो सभी के लिए पृथक–पृथक और सामूहिक रूप से वर्णन किया है समयानुकूल सभी की चर्चा हम इस संदर्भ में करते रहेंगे आप इससे लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

परिवार के पात्र–परिवार में मुख्य भूमिका होती है पिता की, माता की फिर पुत्र, पुत्री, पुत्रवधू, दादा, चाची, ताऊ, ताई आदि आदि इनका उत्तरदायित्व क्या है शास्त्र और समाज किस रूप में देखना चाहता है थोड़ा सा अवलोकन कर हम जहां जिस स्थिति और परिस्थिति में हैं अपना सुधार कर देवें वैसे हमें उक्त सभी सम्बन्धों में आयु और वर्ग लिंग भेद से समयानुसार पहुंचना है वहां हमारी योग्यता इसी में है कि जो हम अब अपने बड़ों से अपने लिए अपेक्षा करते हैं। उस पर हम भी समय आने पर उनके लिए खरे उतरें। उदाहरण के लिए सभी राम को आदर्श मानते हैं वह जब बालक रूप है तो अपने गुरू जनों से पूर्ण आशीर्वाद सेवा द्वारा प्राप्त करता है भाई बनकर भी उच्च आदर्श का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं दुनियां में खुद राजगद्दी पर न बैठकर उनकी चरण पादुकायें रखकर ही राज्य करता रहा तो लोग कहते हैकि भाई हो तो राम भरत जैसा– भरतमिलाप तो प्रसिद्ध ही है और इसी प्रकार राजा की भूमिका में रामराज्य स्थापित कर दिया। आज तक हम उस राज्य का स्वप्न ही देखकर कल्पना कर रहे हैं देखें कब सार्थक होता है। पति के रूप में एक तपस्या हेतु वाल्मीकि आश्रम में भेज देते हैं और पूर्ण ब्रह्मचारी रहकर गृहस्थ धर्म का पालन करते हैं पति के रूप में सीता के साथ १४ वर्ष वनवास के समय उसकी रक्षा में और यज्ञ की रक्षा में जीवन का सदुपयोग करते हैं इसी प्रकार आप देखें कि उनके व्यवहार से मित्रमयी प्रभावित है और शत्रु भी उनकी प्रशंसा करते हैं आप उन्हें किसी भी रूप में देखें तो गुड या मिश्री की तरह सदैव मीठा ही स्वरूप मिलेगा मधुमत् में निक्रमणं... ''मूयासं मधु संदृशः'' मैं मधु जैसा मीठा हो जाऊँ इसी प्रकार हम पुत्र बनें राम जैसे शिष्य बने राम जैसे भाई बने, पिता बने राम जैसे राजा बने और सम्बन्ध ताऊ, चाचा आदि सभी पिता में समाहित होते हैं, परिवार में सभी पर एक दृष्टि रखने वाला ही परिवार का मुखिया सम्मान प्राप्त कर सकता है मैं तो जब कहीं अवसर आता हे रास्म पगड़ी का अथवा किसी विशेष उत्तरदायित्व का, उद्घाटन घर पर नवीन प्रवेश आदि तब कभी–कभी एक बात सुनाया करता हूं आज प्रसंग आ रहा है तो आपको भी सुना देता हूं आजकल आप दैनिक और साप्ताहिक पत्रों में व्यंग चित्र देखते हैं उनसे पूरी राजनीति और समाचारों की जानकारी हो जाती है इसी प्रकार गांधी जी के ३ बंदर है एक आंखे बन्द किये बैठा है, एक कान बन्द किए बैठा है और एक मुख बंद किये बैठा है इसमें भी शिक्षा है इसी प्रकार हम हिन्दू पारिवारों में देखते है कि किसी भी शुभ कार्यों में गणेश जी का पूजन करते हैं घरों में भी दीवारों पर उसका चित्र लगाते हें शिवपुराण में भी उनके जन्म की घटना बड़ी विचित्र एवं हास्यापद है उसकी चर्चा नहीं करूंगा मात्र उस चित्र की तरह ही है ओर यह अलंकार चित्र कहलाता है यह हमें संदेश देता है कि यदि आप अपने घर के गणेश बनना चाहते हो तो ऐसे हो जाओ गण अर्थात् समूह ईश–स्वामी वह गण कितना भी बड़ा और छोटा हो सकता है उदाहरण के रूप में घर का गणेश घर का मालिक, ग्राम का गणेश, ग्राम प्रधान, तहसील का गणेश एस.डी.एम जिला का गणेश जिलाधिकारी, प्रदेश का गणेश मुख्यमंत्री या राज्यपाल और देश का गणेश–राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री, सेना का गणेश–सेनापित इस प्रकार आप किसी फर्म, फैक्ट्री, विद्यालय अथवा संस्थान विश्वविद्यालय के साथ जोड़कर वि.वि. के कुलपति महोदय को गणेश कह सकते हैं। पूर्व काल में व्यवहारिक या वाणी में और कर्म में अब मात्र वित्र में ही सिमट कर रह गया है इसका रहस्य जानना भी आवश्यक है चित्रकार बताना चाहता है कि यदि आप किसी भी परिवार अथवा वर्ग के गणेश बनना चाहते हैं तो आपको अपनी नाम लम्बी अर्थात् सम्मान परिवार में तभी मिलेगा जब कान बड़े हो अर्थात् सभी की समस्या सुख दुःख को सुनने की क्षमता प्रसन्न चित्त रहना कभी क्रोध न करना होगा अर्थात् सुनकर पेट में रखते रहो बात पचाने की क्षमता हो, कोई कर्मचारी सदस्य किसी बात को कहे तो उसे भी सुनकर पेट में रखलो उल्टी मत करो अर्थात् चुगली की आदत न डालो, कान से सुनकर इधर उधर न निकालो, आंखे छोटी, सूक्ष्मदर्शी, समदर्शी आदि गुणों से युक्त हो, परिवार में किसी से पक्षपात की स्थिति न आ जाये, एक हाथ में लड्डू प्रसन्नता और भरणपोषण करने की क्षमता एक हाथ में हथियार रक्षा करने की क्षमता एक हथ में कमल स्वच्छता एक हाथ में माला प्रभुभक्ति में पूर्ण विश्वास और समर्पण गति धीमी अर्थात् चंचलता नहीं होनी चाहिए कहीं–कहीं एक हाथ में पुस्तक है अर्थात् पढ़े की रूचि स्वाध्याय करने वाला शांतचित्त व्यक्ति ही परिवार का मुखिया कहलाने का अधिकारी बन सकेगा इसी व्याख्या यदि करने लगें तो पूरा समाज शास्त्र बन जायेगा आप अपने–अपने स्तर पर चिन्तन करके अपनी दृढ़ता के लिए प्रयास आरम्भ कर देवें और गुणों का धीरे–धीरे विकास करके आप अनुभव करेंगे अब हमारे परिवार में झगड़ा नहीं होता आपस में सभी सम्मान करते हुए प्यार से रहते हैं। प्रत्येक सदस्य अपना अपना पृथक महत्व रखता है अब मैं कुछ विशेष पात्रों की परिभाषा बताना उचित समझता हूँ।

पिता–यह पा रक्षणे धातु से बनता है जो अपने बच्चों का पालन–पोषण और रक्षण करें उसे पिता कहा जाता है प्यार के सभी सामन की व्यवस्था करने और सुरक्षित रखने का प्रबंध करना पिता का ही उत्तरदायित्व है घर में किसी भी पदार्थ की कमी न रहे समय–समय पर निरीक्षण भी करता रहे दूध, घी, अन्न, धन, एवं वस्त्रों के अलावा भवन निर्माण साज सज्जा आदि सभी व्यवस्थायें उसी के अधीन है अपने बच्चों के विचारों और संस्कारों का पोषण और रक्षण भी इसी के अन्तर्गत आता है।

माता– माङ् माने धातु से तृच् प्रत्यय करके मातृ और मातृ से माता शब्द बनता है जो सम्मान की अधिकरिणी है और पवित्र संस्कारों से पुत्र का निर्माण करती है ''माता निमातृ भवति'' बच्चों का लालन–पालन और संस्कारों का निर्माण माता के ही हाथों में होता है मां मापनेअर्थ में भी तृच होकर माता शब्द बन जाता है मापना–नापना या वजन देखना अर्थात् माता गुरूतरा भूमेः माँ का वजन भूमि इस पृथ्वी से भी अधिक है पृथ्वी से तुलना क्यों की है एक स्थान पर लिखा है क्षमया पृथिवी समा अर्थात क्षमा करने में पृथ्वी के बराबर है माता को पृथ्वी से ऊपर भारी होने का गोरव इसीलिए दिया है कि हम पृथ्वी पर गंदगी करते हैं तो वह मात्र सहन कर लेती है क्रोधित नहीं होती है लेकिन मां सहन भी करती है और गंदा करने वाले को पवित्र भी कर देती है स्वयं भार सहन करके स्वयं गंदगी में अथवा गीले में रहकर अपने शिशु को सूखे में सुला कर प्रसन्न होती है स्थान नहीं होता तो अपने ऊपर ही सुला कर अपने कर्तव्य का पालन करती है। ऐसी माँ का ऋण कोई उतार सकेगा अर्थात् नहीं। ऐसी मां यदि संस्कार देखकर बच्चे का सही निर्माण करें तो वह नाम को सार्थक करती है ''जननी'' नाम भी माता का है लेकिन वह मात्र पैदा करने तक हैं जैसे श्री कृष्ण की जननी थी देवकी और माता थी यशोदा परिवार में माँ की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है–

जननी जने तो अस जने के दाता कै सूर।
नहीं तो रहिये बाँझ ही काहे गवाने नूर।।

यही माता के लिए संदेश दिया है कि माता अपने पुत्र का निर्माण करे अच्छे संस्कारों से उसे दानी तथा शूरवीर बना दे वर्चस्वी, तेजस्वी, तपस्वी, धर्मात्मा, परोपकारी, विद्वान् बलवान्, जैसे गुण पैदा न कर सकें तो बिना संतान ही रह जाये तो अच्छा है इसलिए मातायें स्वयं तेजस्वी होकर बच्चों को शूरवीर बनाने के शुभ संस्कार प्रदान करती रहती है ऐसी माताओं से ही राष्ट्र सम्मानित होता है आप ऐसी ही मातायें परिवार के लिए संकल्पित होकर समर्पित होती है अच्छा परिवार बनाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका माता की है हम सभी परिवारों में इन पर विशेष ध्यान देकर अपने अपने उत्तरदायित्व का पालन करें।

मम्मी बनकर माता शब्द कलंकित होने से बचावें इस पाश्चात्य संस्कृति ने हामरे माता को पिता को मार दिया और हमारा घर आचार्य चाणक्य के शब्दों में श्मशान बना दिया है इससे बचो इसी में हम सभी का कल्याण हैं।

श्रेष्ठता प्रदान करने वाली वेदमाता

– डॉ0 रमण कुमार

स्तुता मया वरदा वेदमाता
प्र चोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिम् द्रविणं
ब्रह्मवर्चसम्।
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।

अथर्ववेद १९.७१.१

(स्तुता मया वरदा वेदमाता) मैंने श्रेष्ठता प्रदान करने वाली वेदमाता की स्तुति की है जो (द्विजानाम् पावमानी) द्विजों को पवित्र करने वाली है। (प्र चोदयन्ताम्) हे दिव्यशक्तियों, आप मुझे सन्मार्ग में प्रेरित करती रहें। (आयुः, प्राणम्, प्रजाम्, पशुम्, कीर्तिम, द्रविणम्, ब्रह्मवर्चसम्) आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन और ब्रह्म के तेज को (मह्यम् दत्वा) मुझे प्रदान कर (ब्रह्मलोक जाइए।

जीवन में श्रेष्ठता मिले, प्रतिभा मिले, दक्षता और असामान्य उपलब्धियां मिलें, धन–मान यश से हम पूर्ण हों, शारीरिक, मानसिक तथा आत्ममिक सामर्थ्यों से हम संपन्न हों, ये कामनाएं प्रत्येक साधक की रहती हैं। मानव कुछ एक कामनाओं की सिद्धि में तो सफल हो जाता है, पर कई बार असफलताएं उसके हाथ लगती हैं। ऐसे में वेदों के उपदेश का मनन कर वह सर्वविधि सफलतताओं को प्राप्त करने की उम्मीदें बांधता है।

वह कहता है, मैंने श्रेष्ठता प्रदान करने वाली ऋचाओं रूपी वेदमाता की स्तुति की है, अर्थात् वैदिक विचारों का मनन एवं उनके अनुसार आचरण करना प्रारंभ कर दिया है। तात्पर्य यह है कि हमें पुरूषार्थ के साथ–साथ अध्यात्म से जुड़े रहकर अपनी समस्त भौतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वैदिक ऋचाओं की स्तुति और उनका पालन करना चाहिए।

बि़ना पुरूषार्थ से की गई स्तुतियां जीवन में श्रेष्ठता नहीं लातीं। पुरूषार्थी को ही स्तुति करने का अधिकार है, आलसी को नहीं। इसीलिए उपनिषद् कहती है, नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः (मुंडकोपनिषद् ३.२.४), अर्थात् कमजोर, आलसी व्यक्ति के लिए अध्यात्मज्ञान कारगर नहीं होता है।

वेद को इस मंत्र में माता कहा गया है। 'वेद' शब्द का अर्थ ज्ञान है और माता निर्माण करने वाली होती है–निरूक्त २.८। सच्ची माता अपनी संतान को कर्मनिष्ठ, चरित्रवान् एवं संस्कारवान बनाती है। वैदिक ऋचाएं हमारी माता के समान हैं क्योंकि इनके विचारों से हमें नया जन्म मिलता है, हमारा चरित्र निर्माण होता है, हमें आदर्श जीवन जीने का मार्ग मिलता है।

वैदिक ऋचाओं से हमें माता जैसे अच्छे विचार ही मिलते हैं जैसे मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् (अथर्ववेद ३.३०.३), अर्थात् भाई–भाई से बैर न करे, सं गच्छध्वम् (ऋग्वेद १०.१९१.२) हम साथ–साथ चलें।

वेदमाता वर–दा है, वर, अर्थात् श्रेष्ठता देने वाली है। वैदिक ऋचाओं की नित्य स्तुति से, उनके मनन और स्वाध्याय से, उनके अनुसार आचरण से अपने वाली श्रेष्ठता ही वर है। जीवनयात्रा में हमें सर्वविधि श्रेष्ठता की कामना हो। जीवन जीना है तो श्रेष्ठता की कामना हो। जीवन जीना है तो श्रेष्ठता के साथ जीना, नहीं तो पशु भी जी लेते हैं।

स्वार्थपरक और अन्यों के लिए हानिकारक किसी ऐसे वर या सिद्धि की कामना नहीं की जा रही है जिसे रावण, कुंभकर्ण आदि ने अपने हठयोग से प्राप्त किया हो। बल्कि श्रेष्ठतारूपी वर की कामना है जो हमारे जीवन को सुसंस्कृत कर हमें सदाचारी और कर्तव्य–परायण बनाती है।

मंत्र में दिव्य शक्तियों से प्रार्थना है कि प्र चोदयन्ताम्, वे मुझे प्रेरणा प्रदान करें। हम अपने दैनिक जीवन की व्यस्तता के कारण दिव्य शक्तियों को विस्मृत न कर दें, उत्साहित करती रहें। नित्य अपने समस्त कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए हम उनका स्मरण करते रहें जिससे हम भौतिक सुख के साथ–साथ अध्यात्म की ओर भी अग्रसर हो सकें। गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है, माम् अनुसार युद्ध च (८.७), अर्थात्, ईश्वर का स्मरण करते हुए युद्ध जारी रखो।

वेदमाता के गुण बताते हुए मंत्र में आगे कहा गया है कि वह द्विजानाम् पावमानी, अर्थात् द्विजों को पवित्र करने वाली है। द्विज का अर्थ है दो बार जन्म लेने वाला। स्मृतिग्रंथों के अनुसार वैसे तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं पक्षी भी द्विज हैं–एक बार मां के गर्भ से जन्म लेने, और दूसरी बार यज्ञोपवीत धारण करने या अंण्डों से बाहर निकलने के कारण। परन्तु यहां द्विजत्व से तात्पर्य है पहली बार माँ के गर्भ से जन्म लेने के बाद, दूसरे जन्म के रूप में बुरे आचरण एवं बुरे विचारों का नाश। ऐसे द्विजों को वेदमाता पवित्र करने वाली हैं। तात्पर्य यह है कि जो जीवन के मौजूदे ढांचे को गिरा कर नई विधा से, नई जीवन शैली से जीने को तैयार है, वेदमाता उसे पवित्र करने वाली हैं, वेदों के विचार उ़सी व्यक्ति में श्रेष्ठाता लाने वाले हैं।

मंत्र में आगे कहा, आयुः प्राणम् प्रजाम् पशुम् कीर्तिम् द्रविणम्। मानव की भौतिक आवश्यकताएं नितांत हैं जिनके बिना उसका जीवन कष्टप्रद बन जाता है। यहां दिव्य शक्तियों एवं वेदमाता से प्रार्थना की गई है कि वे हमें दीर्घ आयु, निरोग जीवन, उत्तम संतान, पशु, यश एवं धन प्रदान करें जिनसे हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।

आगे प्रार्थना की गई है, ब्रह्मवर्चसम् हे वेदमाता, हे दिव्य शक्तियों, आप हमें भौतिक आवश्यकताओं के साथ–साथ ब्रह्मतेज, उत्तम आचरण, सत्य एवं संयम का पालन करने की शक्ति दीजिए जिससे हम अध्यात्म की दिशा में भी अपने जीवन को समर्पित कर सकें।

अंत में कहा, व्रजत ब्रह्मलोकम्। हे वेदमाता, हे दिव्यशक्तियों, आप मुझे समस्त भौतिक एवं आध्यात्मिक सुखों को प्रदान करते हुए ब्रह्मलोक में प्रविष्ट हो जाएं। यहां ऋषि ने स्वार्थसिद्धि की कामना नहीं की है, बल्कि व्यंजना के द्वारा यह परिलक्षित कराया है कि आप मुझे समस्त सुखों को प्रदान कर अगर ब्रह्मलोक जाना चाहें तो जाएं। मैं आपकी यात्रा में बंधन बनना नहीं चाहता हूं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि वेद की ऋचाएं माता हैं, क्योंकि ये मानवों का निर्माण करने वाली हैं। उनकी नित्य स्तुति से, अध्ययन से, मनन से एवं उनसे संबंधित आचरण से मनुष्य पुरूषार्थ से युक्त होता है और अपने जीवन को सुसंस्कृत कर स्वयं में श्रेष्ठता का आधान करता है।

माता–पिता बच्चों के प्रति अपने व्यवहार पर ध्यान दें।

-डॉ० वेद प्रकाश

माता–पिता बनने के बाद लाइफ बहुतत में बहुत से परिवर्तन आ जाते हैं। ऐसे में बच्चे के साथ, दोस्ताना व्यवहार रखते हुए उसकी देखभाल काफी मुश्किल हो जाती है। आपको अपने बच्चे को जीवन के सभी पहलुओं के बारे में शिक्षा देनी चाहिए, उसे इस प्रकार समझाएं कि वह भली–भांति उसे समझ पाएं। बच्चे को जब भी कुछ सिखाएं तो प्यार और देखभाल की भावना के साथ समझाना चाहिए।

बच्चे को कभी भी बोझ न समझें और न ही उसे ऐसा जताएं कि आपको उसकी वजह से कितनी दिक्कतें होती है। कई बार बच्चों को आपका असल प्यार दिखाई नहीं देता है और उनकी आपसे दूरी बढ़ जाती है। अगर आप अपने बच्चे पर किसी बात को लेकर चिल्लाते हैं तो उसे इसकी वजह समझ न आएं, पर वह आपको मन ही मन बुरा मान सकता है। आज डॉ वेद प्रकाश आपको ऐसे बुरे अभिभावकों के लक्षण बता रहे हैं जिनके बारे में आपको भी मालूम होना चाहिए।

१. बच्चों को निराश करना– जो माता–पिता अपने बच्चों को उनके किसी भी काम में प्रेरित नहीं करते और न ही उसके कार्यों को देखते हैं वो अपने बच्चों को निराश कर देते हैं। यदि अगर आपका बच्चा प्रयास करता है तो उसकी सराहना करें, उसे प्रोत्साहित करें और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें।

२. बच्चों के काम में पाबंदी लगाना– कभी भी अपने बच्चों पर पाबंदी प्रतिबंध न लगाएं। उन्हें दूसरों बच्चों के साथ खेलने दें, तरह–तरह के फूड को खाने दें और नई–नई चीजों की खोज करने दें। इससे उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा और अच्छी व बुरी चीजों में फर्क पता चलेगा।

३. बच्चे की राय न पूछना– अगर आप कही जाने का प्लान बना रहें है या फिर घर में कोई नई चीज लाना चाहते है तो उसमें बच्चे से उसकी राय अवश्य लें। उसे क्या पसंद है, वह क्या करना चाहता है, उसे क्या चाहिए आदि... ऐसा करने से बच्चे को अपना महत्व समझ में आएगा और वह परिवार व आपके प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी समझेगा।

४. बच्चों से दोस्ताना व्यवहार न रखना– माता–पिता अगर सख्त मिजाज के होते हैं तो बच्चों का विकास भयमुक्त वातावरण में नहीं हो पाता है। ऐसे में वो अपनी बात कभी नहीं कह पाते हैं और दब्बू बनकर रह जाते हैं। बच्चे के साथ दोस्ताना व्यवहार रखना बेहद आवश्यक होता है ताकि उसमें आत्मविश्वास आ सकें और वह जीवन में सफल हो सकें। बच्चे के साथ अपनी समस्याएं कहें और उसकी भी समस्या कहें, इस तरह एक प्यारा सा बंधन बनाएं।

५. बच्चों को डांटना या चिल्लाना– जब आप बच्चे को जन्म देते हैं तो उसे जीवन देते हैं। बेहतर होगा अगर उसका जीवन अच्छा बनाएं। कई अभिभावक अपने बच्चों पर हमेशा चिल्लाते रहते हैं, हर बात में डपटते रहते हैं और हर बात में ताना देते हैं। ऐसा न करें, अपने बच्चे पर हर बात पर न चिल्लाएं। गलती होने पर समझाएं, प्यार से सही गलत का फर्क बताएं। जब बिल्कुल न मानें, तब ही डांट लगाएं।

६. आलोचना करना– कई–पिता दूसरों के सामने अपने बच्चे का मजाक बनाते हैं और उसकी भावनाओं को नहीं समझते हैं। बच्चे के मन की बात समझें और उसकी हंसी न बनाएं। इससे बच्चे को शर्मिंदगी महसूस होती है और उसके बाल मन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। ऐसे बच्चे बढ़े होने के बाद भी दब्बू और शर्मीले रहते हैं।

७. बच्चे के सामने झगड़ा करना– कई माता–पिता अपने बच्चे के सामने ही झगड़ा करते हैं। ऐसा कतई न करें, इससे बच्चे पर बहुत बुरा असर पड़ता है और उसके मन में अपने माता–पिता की अच्छी छवि नहीं रह जाती है। भले ही आप बहुत अच्छे दम्पत्ति हों लेकिन बच्चा आपको हमेशा बुरा ही मानेगा। आपको अगली पोस्ट में इसी विषय पर कुछ होमियोपैथी चिकित्सा अनुभव का भी जिक्र करूँगा।

आर्यसमाज के नियम और उद्देश्य

–लेखक स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती

आर्यसमाज सत्य पर आधारित एक सार्वभौम संगठन हैं, जो संसार के समस्त मानवों का उपकार चाहता है। आर्यसामज की स्थापना बम्बई में शनिवार दिनांक चैत्र शुक्ल ५ सम्वत् १९३२ को विधिवत् हुई थी। इस दिन १० अप्रैल १८७५ था, किन्तु आर्यसमाज की स्थापना के सम्बन्ध में बैठक और चर्चाएं वर्ष प्रतिपदा से ही गम्भीरता से प्रारम्भ हो गई थी, अतएव वर्ष १९३१ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चिय किया था कि आर्यसामज का स्थापना दिवस चैत्र शुक्ल प्रतिपदा सम्वत् २०३२ तद्नुसार ७ अप्रैल, सन् १८७५ है। यही तिथि आज सर्वमान्य हैं। प्रारम्भ में बम्बई में आर्यसमाज के २८ नियम बनाये गये थे, जिनमें व्यवस्था सम्बन्धी उपनियम भी सम्मिलित थे। लगभग २ वर्ष पश्चात् आर्यसमाज लाहौर में महर्षि दयानन्द ने अपने गम्भीर चिन्तन और वेद ज्ञान के आधार पर दिनांक ज्येष्ठ शुक्ल १३, सं० १९३४ वि० तद्नुसार २४ जून १८७७ ई० को आर्यसमाज लाहौर की स्थापना के अवसर पर व्यवस्था सम्बन्धी उपनियमों को अलग कर वर्तमान में प्रचलित आर्यसमाज के दस नियम और उद्देश्य निर्मित कर संस्थापित किए और व्यवस्था सम्बन्धी उपनियमों को अलग कर दिया।

आर्य समाज की मान्यताओं और उद्देश्य को समझने के लिए इन दस नियमों पर चिन्तन आवश्यक है। आर्यसामज के अन्दर और बाहर के लोगों के विचार को उद्वेलित करने की सद्च्छा से संक्षेप में कुछ विचार प्रस्तुत हैं। इन नियमों में प्रथम पाँच में तो सत्य शब्द का स्पष्ट उल्लेख है और शेष में सत्याचारण की व्याख्या हैं। इन नियमों के क्रिया पद को देखने से ज्ञात होता है कि कुछ में ''है'' शब्द का उल्लेख है, जो आर्य समाज के सिद्धांतों और उद्देश्यों को इंगित करता है, जो आर्यसमाज की निश्चित मान्यतायें हैं। दूसरी ओर क्रियापद में ''चाहिये'' शब्द को प्रयोग किया गया है, जो आर्यसमाज के सदस्यों, सभासदों और पदाधिकारियों के आचरण का परिष्कार करता हैं।

सिद्धान्त पक्ष में इन नियमों में सिद्धान्त उल्लेखनीय है–

१. परमेश्वर सब सत्य विधायें और संसार का आदिमूल अर्थात् निमित्र कारण है। संध्या के अर्धर्मषण मंत्रों में इसे ऋति और सत्य कहा है, जो परमात्मा के अनंत ज्ञान और अनंत सार्मथ्य से उद्भूत हुए हैं। (नियम १)

२. इन सत्य विद्याओं का वर्णन, वेद में है, इस हेतु कहा है, ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।'' अतः वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं।

३. ईश्वर के सगुण और निर्गुण गुण कर्म स्वभावों का वर्णन वेद के आधार पर आर्यसमाज के दूसरे नियम में विस्तार से किया गया है। इन्ही का चिन्तन हमें करना चाहिए। इससे स्पष्ट हैं कि परमेश्वर निराकार, सर्वशक्तिमान और सच्चिदानन्द स्वरूप हैं।

४. ईश्वर सृष्टिकर्ता है, अतः निष्क्रिय नहीं हैं। संसार का सदा निर्माण, पालन और संहार करता है।

५. परमात्मा की इसी स्वरूप की उपासना करना सब मनुष्यों को योग्य हैं। अर्थात् परमात्मा के नाम पर अन्य किसी कि उपासना नहीं हो सकती है।

६. वेद केवल दर्शन या पूष्पा का ग्रन्थ ना होकर वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

७. आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है। उपकार का अर्थ प्रत्येक मानव का शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है।

अब ''चाहिये'' पद की व्याख्या हेतु निम्न बिन्दु विचारणीय है–

१. सत्य महर्षि दयानन्द सरस्वती का सदैव केन्द्र बिन्दु रहा है इसीकारण उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ का नाम ''सत्यार्थ प्रकाश'' रखा है। अतः सत्य ज्ञात होने पर उसे ग्रहण करने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। दुआग्र पूर्वक सत्य को स्वीकार न करना अनुचित है।

२. महर्षि दयानन्द का प्रिय मन्त्र जिसे यजुर्वेदभाष्य के प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में लिखा है और प्रार्थना मन्त्रों में पहला स्थान दिया है। हमें दुरित अर्थात् असत्य को छोड़ने की प्रेरणा देता है इसलिए हमें असत्याचरण से दूर रहना चाहिए।

३. महर्षि ने कहा है कि प्रत्येक व्यक्ति विद्वान् नहीं बन सकता किन्तु प्रत्येक धार्मिक अवश्य बन सकता है। अतः हमें प्रत्येक कार्य धर्मानुसार करना चाहिए और धर्माचरण सत्या सत्य विवेक है।

४. आपस में एक दूसरे से व्यापर के सम्बन्ध में सातवें नियम में पुनः ''धर्मानुसार'' अर्थात् ''सत्य और असत्य को विचार करके'' का उल्लेख किया गया है किन्तु धर्माचरण में इस नियम में दो विशलेषण लगाये गये हैं। प्रथम ''प्रीतिपूर्वक'' अर्थात् ''द्वेष रहित'' तथा द्वितीय ''यथायोग्य'' शब्दों का उल्लेख है। इसलिए धर्माचरण करते समय प्रत्येक से व्यवहार में यथा योग्य और प्रेम का ध्यान रखना चाहिए।

५. ज्ञान और विवेक पर महर्षि का विशेष बल था। इसलिए प्रत्येक को वेदाध्ययन अधिकार महर्षि की मान्यता थी महर्षि के बाद दूसरी पीढ़ी के आर्यजनों ने बालकों के लिए गुरूकुल, डी.ए.वी. कालेज तथा आर्य विद्यालयों की स्थापना की एवं कन्याओं के लिए कन्या गुरूकुल एवं आर्य कन्या पाठशालाओं की स्थापना में अपना तन, मन, धन लगाया। हमें इस कार्य को विशेष रूप से विस्तारित और परिषक्रित करना चाहिए। जिससे विद्या की वृद्धि और अविद्या का नाश हो सके। विद्या का आधार पराविद्या अर्थात् की रीति से परमात्मा की उपासना पर भी क्रियात्मक रूप से बल देना चाहिए।

७. महर्षि दयानन्द सरस्वती को स्वतन्त्रता बहुत प्रिय थी। इसी कारण संध्या के मन्त्रों में ''अदीनाः'' शब्द की व्याख्या में महर्षि ने ''व्यमं स्वतन्त्राः स्याम'' शब्द का प्रयोग किया है और स्वतन्त्रता का उद्गोश वायसराय के सामने भी निर्भयता से किया है। १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया है। आर्यों में स्वतन्त्रा आन्दोलन में जेल जाने वालों में ८५ प्रतिशत आर्य समाज के लोग थे। व्यवहार जगत में संगठन का विशेष महत्व है संगठन सदा व्यक्ति की इस अहम मान्यता के कारण कमजोर होता है कि व्यक्ति सर्वहितकारी एवं सामाजिक उन्नति के कामों में भी अपनी ही चलाना–चाहता है। आर्य समाज सामाजिक संस्थाओं में जन तान्त्रिक प्रक्रिया का हामि है अतः इस नियम में स्पष्ट कहा गया है कि सामाजिक सर्वहितकारी कार्यों में व्यक्ति बहुमत था सर्वमत के आधीन रहना चाहिए। तभी संगठन सुर्दण और सशक्त बनता है।

जहां तक व्यक्तिगत प्रकृति, रूचि, सामर्थ्य और आवश्यकताओं का सम्बन्ध है वहां व्यक्ति स्वतन्त्रत रूप से ध्यान उपासना आदि आध्यात्मिक कार्य करें। श्रम व्यायाम व योगाभयास करें निद्रा, आहार, औषधि उपचार आदि में प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्र रहना चाहिए क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की प्रकृति और सामर्थ्य नितान्त भिन्न–भिन्न है। स्वतन्त्रता और परतन्त्रता की सूत रूप में व्याख्या इस नियम में वर्णित शब्दों से भिन्न नहीं की जा सकती।

स्थानाभाव के कारण आर्य समाज के दस नियमों और उद्देश्यों पर एक विहंगम दृष्टि डाली गयी है इन पर एक–एक पर विशतित ग्रन्थ की रचना की जा सकती है। सूधि पाठक चिन्तन के उक्त सूत्रों पर जहाँ तक चाहें। विचार कर सकता है क्योंकि इनमें वेद और महर्षि दयानन्द सरस्वती के ज्ञान का सार रूप व्यक्त किया गया है। इति ओम् शम्।।

वैराग्य

वयं येभ्यो जाताश्चिरतरगाता एवं खलु ते
समं पैः संवृद्धाः स्मरण पदवीं तेऽपि
गमिताः।
इदानीमेते स्मः प्रतिदिवसमासन्नपतना
गतास्तुल्यावस्थां सिकतिलनदीतीर
तरूभिः।।

जिनसे हमने जन्म लिया था, वे तो कब से ही परलोग चले गए और जिनके साथ बढ़कर हम बड़े हुए थे वे भी परलोक वासी हुए, अब हम रहे सो प्रतिदिन अब गिरें, अभी पड़ें ऐसी अवस्था वाले हम भी बालुका वाली नदी के किनारे पर खड़े हुए वृक्ष के सामन हो रहे हैं।

पूर्व काल में बहुत विस्तृत पृथ्वी का स्वामी एक राजा था। वह सब बातों से परम सुखी था। धन, धान्य, पुत्र, पौत्र आदि सन्तानों, राज्य सेना, कुटुम्ब, मित्र तथा ऐसी सभी वस्तुओं से वह भरपूर था। किसी बात का दुःख नहीं था।

एक दिन वह रात को रंगमहल में सो रहा था। उस समय उसको विचार उत्पन्न हुआ कि अहो मुझसा सुखी कौन होगा? मुझको इस समय सर्व पदार्थ प्राप्त हैं। वे सभी अनुकूल भी हैं दुख का लेश भी नहीं है।

दोस्त हो तो ऐसा

– साभार

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और शौतेन्द्रो कुमार घोष बचपन में सहपाठी थे। कलकत्ता के स्कॉटिश चर्च स्कूल में पढ़ते थे। फिर स्कॉटिश चर्च कॉलेज में पढ़े थे, एक साथ। सुभाष बोस रहते थे एलगिन रोड पर अपनी आलीशान दो मंजिली कोठी में और शौत्तेन्द्रो घोष भवानीपुर मोहल्ले में रॉय स्ट्रीट पर दो नम्बर बंगले में। दोनों के घर पास–पास थे। घोष रग्बी और फुटबाल के कैप्टेन थे। सुभाष और उनके बड़े भाई शरत अपने पड़ोसी के खेल पर जी–जान से फिदा थे।

पढ़ाई–लिखाई खत्म होने पर सुभाष और शौत्तेन्द्रो दोनों आई.सी.एस. (इण्डियन सिविल सर्विस) के इम्तहान मैं बैठे। दोनों अच्छे नम्बरों से पास हुए और ट्रेनिंग के लिए इंग्लैण्ड भेजे गए। विदेश में सुभाष को भारत और भारतवासियों को गुलाम बनाए रखने वाला अंग्रेजों का रवैया भाया नहीं। वे तो बस स्वतन्त्र भारत की ही तस्वीर साकार होते देखना चाहते थे। आई.सी.एस. की नौकरी का चक्कर छोड़छाड़ सीधे लौटे भारत और अपने प्यारे, मगर गुलाम देश की आजादी के लिए राजनीति में कूद पड़े। सुभाष ने युगों से सोई जनता को जगाने के कठिन कार्य का संकल्प लिया।

शौत्तेन्द्रो और सुभाष का सम्पर्क पूरी तहर टूट चुका था, लेकिन जब भी शौत्तेन्द्रो अखबारों की सुर्खियों में अपने सुभाष की उपलब्धियों, बुलन्दियों और भारतीय और भारतीय जन–मानस पर उनका अमिट प्रभाव देखते–पढ़ते, तो उनका हृदय आनन्द से खिल उठता था और वे उनके प्रति नतमस्तक हुए बिना न रहते थे।

अब इस समय भीषण युद्ध के दौरान शौत्तेन्द्रो को अपने बर्मी एजेंटों द्वारा नेताजी सुभाष के बारे में उपयुक्त जानकारियां मिल रही थीं। उन्होंने अपने एक खास एजेंट के जरिए नेताजी के पास खबर भिजवाई कि उनका और उनकी आजाद हिन्द फौज का भारत भूमि पर अभूतपूर्व स्वागत है, यदि वे कोहिमा की ओर से दाखिल हों। चटगाँव की तरफ भूलकर भी कदम न बढ़ायें। वहाँ चप्पे–चप्पे पर दुश्मन उनकी घात में बैठे हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरे गोरिल्लों द्वारा आजाद हिन्द फौज के नौनिहाल देशभक्तों का सफाया हो। तब तो भारत की स्वाधीनता की रही–सही आशा भी धूल में मिल जाएगी।

यह राष्ट्रप्रेम भरा सन्देश पाकर नेताजी के नेत्र सजल हो गए। उन्हें बचपन की सभी पुरानी बातें याद आईं। उन्हें अपने बालसख पर पूरा भरोसा था। वे उसकी बात मान गए।

१८ मार्च, १९४४ को आजाद हिन्द फौज के बाँके जवान मारते–काअते, सड़कें तोड़ते, पुल उड़ाते, कोहिमा और मणिपुर तक आगे बढ़ आए और १४ अप्रैल, १९४४ को नेता जी ने स्वयं अपने ही हाथों मोइरंग में भारत–भूमि पर राष्ट्रीय झण्डा फहराया। लगातार दो महीनों तक घास खाकर, पत्ते चबाकर, नदी–नालों का जल पीकर जूझे थे भारतीय वीर।

इस घटना से पहले अराकान युद्ध ने और भी भयंकर रूप धार कर लिया था। जाँबाज जापनी अपनी जान पर खेल रहे थे। अंग्रेज बौखला गए और फरवरी १९४४ में रिजर्व में रखी अपनी २६वीं और ७०वीं डिवीजनें भी लड़ाई के मैदान में झोंक दीं। लिबरेटर चर्चिल, वेलिंग्टन, ब्लेनहेम्स, बल्टीनेंजनेंस बमवर्षकों से अंधाधुंध बमबारी करके जापानियों की युद्ध–सामग्री ले जाने वाले सभी थल और जल–मार्ग रोक दिए। 'फोर्स– १३६' एजेंटों ने, जिनमें घोष के गोरिल्ले भी शामिल थे, उनकी रेलों और सड़कों को काम आने लायक नहीं रखा। यही कारण था कि अधिकांश जापानी सैनिकों को बैंकॉक से इम्फाल तक पन्द्रह सौ किलोमीटर की दूरी पैदल ही तय करनी पड़ी। हमने उनकी रेलों और मोटरगाड़ियों का तो दौड़ना बन्द कर दिया था, लेकिन हमारा शक्तिशाली रॉयल एयर फोर्स जापानी सैनिकों को यह असम्भव दूरी पैदल तय करने से न रोक पाया।

गले में लटकते केवल मुट्ठी भर चाव के दानों के सहारे ही वे जूझ रहे थे। उनकी युद्ध–सामग्री समाप्त हो चुकी थी। घोष के एजेंटों ने उनकी सप्लाई लाइन काटकर उनकी रसद का आना ही बन्द कर दिया था। सैकड़ों तो भूख–प्यास और घुटन से ही तड़प–तड़पकर मर गए और हज़ारों ने अपनी पेटी से लटककर 'हाराकिरी कर ली। आत्मसर्पण से मृत्यु उन्हें कहीं सम्मानजन और प्रिय थी। अराकान युद्ध जैसी विभीषिका शायद ही इतिहास के पत्रों में देखने को मिले।

मुस्लिम लीग नेता हसन शहीद सोहरावर्दी, घोष से दुश्मनी रखने लगा। इसकी खास वजह थी कि जब घोष युद्ध रेखा के पीछे होते, तो सोहरावर्दी घोष के शरणार्थी शिविरों में जाकर राजनीतिक भाषण देता और मुसलमानों के बीच हिन्दुओं के प्रति घृणा के बीज बोता। इस प्रकार वह वहाँ के मुसलमानों पर अपना सिक्का जमाना चाहता था। घोष ने इस बात पर एतराज किया। सरकार को भी आगाह कर दिया कि भारत–विभाजन के बीज बोए जा रहे हैं। फिर बंगाल प्रान्त के मुस्लिम लीगी नेताओं को चेतावनी भी दे दी कि वे भूलकर भी उसके शरणार्थी शिविरों में कदम न रखें, मगर सोहदावर्दी को इस बात की कहाँ परवाह? उसके कंधे पर तो अंग्रेजों का हथ था। वह घोष के शरणार्थी कैम्पों में बिना उनकी पूर्व अनुमति कें ही दाखिल होने लगा। ऐसे ही एक मौके पर घोष की गैरहाजिरी में उन्हीं के आदेश से सोहरावर्दी और उसके साथियों को मामूली घुसपैठियों की तरह पकड़ लिया गया। फिर घोष के आने पर ही सबको छोड़ा गया, इस चेतावनी के साथ कि भविष्य में फिर यहाँ आने की जुर्रत न करें। सोहरवर्दी इस बात को कभी भूला नहीं और घोष को मटियामेट करने को तदबीरें भिड़ाने लगा।

आर.बी. लैगडन के माध्यम से फोर्स–१३६ घोष को बहुत ही अच्छा पारिश्रमिक देता था। लैगडन असम में कई चाय बागानों के मालिक थे। वे घोष के पुराने मित्र भी थे। लैगडन इस धनाशि का एक बड़ा भाग घोष के सालिसीटर–फाउलर एण्ड कंम्पनी के मालिक हैरी फाउलर के पास जमा कर दिया करते थे। यह सब सर गाल्विन स्टुअर्ट की सिफारिश पर ही किया गया था। घोष ने फाउलर से इतना अलबत्ता कहा था कि इस रकम को अच्छे से अच्छे काम में लगाया जाए। फाउलर ने घोस के लिए कलकत्ता में बिल्डिगें खरीदनी शुरू कर दीं।

अपनी बेहतरी कारगुजारी के फलस्वरूप सन् १९४५ के शुरू में घोस की महत्ता काफी बढ़ गई थी और लड़ाई खत्म होने पर घोष को दी गई ताकत, रूतबा, धन–दौलत देखकर अंग्रेज चौंक। घोष हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने पहाड़ी आदिवासियों को जापान के खिलाफ करने में जबरदस्त कामयाबी हासिल की थी। यह काम था भी उन्हीं के बस का। सर गाल्विन स्टुअर्ट और सर कॉलिन मिकेन्जी घबरा गए कि कहीं घोष इन्हीं आदिवासियों को हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए आगे खड़ा न कर दें, जिससे उनका बंगाल–विभाजन का ख्वाब हमेशा के लिए मिट्टी में मिल जायेगा। 'फोर्स–१३६' बंगाल–विभाजन के पक्ष में था और घोष उसके बेहद खिलाफ। बंगाल पर जापनी कब्जा भी नहीं हो पया। अंग्रेजों का घोष से मतलब भी निकल चुका था। फिर तो घोष को मिटा डालने का फैसला आनन–फानन में कर लिया गया। फैसला करने वालों में थे–सर गाल्विन स्टुअर्ट, जनरल सर गिफर्ड और हसन शहीद सोहरावर्दी ''जो बाद में अविभाजित बंगाल का मुख्यमंत्री बना'' खान बहादुर ई.ए.रे. और उनके साथी।

'फोर्स–१३६' ने धन और रूतबे का लालच देकर कुछ लोग तैयार किए। उन्होंने झूठे–सच्चे इल्जाम लगाकर घोष के खिलाफ उलटी–सीधी शिकायतें जड़ीं। लाखों सरकारी रूपयों की फिलूलखर्ची और गोलमाल के जुर्म में घोघ को दण्ड का भागी बनाया गया। सामनपे से घोष की मुखलफत करने वाले प्रमुख व्यक्ति थे–इण्डियन मेडिकल सर्विस के मेजर फिच (इन्हीं हजरत ने मेजर ड्रेक बोजमैन और सर जफरूल्ला खाँ के सहयोग से भारत में हिन्दू–मुस्लिम दंगों और दशे–विभाजन की रूपरेखा तैयार की थी, जिसे 'पोस्ट क्विट प्लान' के नाम से जाना गया), चटगाँव–ढाका के कमिश्नर मिस्टर जेमिसन। फिर अन्त में तो बर्मा के लिए अमरकी और चीनी फौजों को छोड़कर ब्रिटिश लैण्ड फोर्सेज के माण्डर इन–चीन जनरल सर जॉर्ज गिफर्ड, जी.सी.बी. , डी.एस.ओ., ए.डी.सी. तक इस घिनौने काम पर उतर आए। –क्रमशः

पृष्ठ १ का शेष

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग ...

बहराइच में श्री शिव नारायण आर्य वानप्रस्थ आश्रम बनाने का निश्चय किया गया जिसका विधिवत् उद्घाटन १२–१३ मई को बहराईच जिला सभा के संयोजन में किया जा रहा है। प्रदेश के प्रत्येक भाग से आये लगभग २०० प्रतिनिधियों में विशेष उत्साह दिखाई दे रहा था जिन्होंने भावी कार्यक्रमों को पूरा करने का संकल्प लिया और जातीय समरसता को बढ़ाने के लिए पूरे प्रदेश में समय–समय पर बैठक–सम्मेलनों का आयोजन करके प्रत्येक ईकाई तथा जिला सभायें अपने–अपने क्षेत्रों में वातावरण को मधुर बनाने का प्रयास किया जायेगा इसका सभी ने समर्थन किया।

म० नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला नैनीताल में योग शिविर लगाने एवं चिन्तन शिविर के लिए ६, १०, ११ जून २०१८ की तिथियां निश्चित की गई। गुरूकुलीय शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न को साकार करने के लिए आर्ष परम्परा के वैदिक विद्वान् तैयार किये जाये तथा आर्य भजनोपदेशक एवं आर्य उपदेशक विद्वान् तैयार किये जाये इसके लिए स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में ५,६,७ जौ० २०१८ को अखिल भारतीय गुरूकुल सम्मेलन हरिद्वार में मनाया जा रहा है उसमें पूरे प्रदेश के गुरूकुल एवं आर्य समाजों को पहुंचाने का निर्देश देते हुए प्रदेश की समाजों से सहयोग की भी भरपूर अपील की आगामी बैठक मुरादाबाद में करने की घोषणा भी ज्ञानेन्द्र गान्धी जी ने की जिसे सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया। इस प्रकार सौहार्द पूर्ण वातावरण में बैठक सम्पन्न होने पर सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री ने सभी प्रदेश से आये प्रतिनिधि एवं अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय शिविर

04 जून से 17 जून 2018

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से आयोजित शिविर में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक स्वामी देवव्रत सरस्वती की अध्यक्षता में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी का शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण सुयोग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। प्रवेशार्थी आर्यवीर दल या आर्यसमाज के अधिकारी का संस्तुति पत्र, २ फोटो एवं पहले उत्तीर्ण परीक्षा के प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि साथ लेकर आयें। शिविर के अनुशासन का पूर्णतः पालन करना होगा। अनुशासन भंग करने पर शिविरार्थी को शिविर से पृथक् भी किया जा सकता है।

ऋषिपाल आचार्य
शिविर संयोजक
६८११६८७१२४

प्रवीण शास्त्री
प्रधान व्यायाम शिक्षक
६४६७०७१७३३

सत्यवीर आर्य
महामंत्री सार्व.आ.वी.द.
६४१४७८६४६१

मा० रामपाल
प्रधान, आ.प्र. सभा, हरयाणा
६४१६८७४०६५

विनय आर्य
महामंत्री, आ.प्र. सभा, दिल्ली
६६५८१७४४४१

आर्य समाज असुरव रेलवे कालोनी का निर्वाचन दिनांक 8.4.2018 को प्रातः 9 बजे आर्य समाज मन्दिर, गोरखपुर में सम्पन्न हुआ।

१. प्रधान– श्री योगेन्द्र सिंह, २. उप प्रधान– श्री सीताराम यादव, ३. मंत्री– श्री नन्दलाल यादव, ४. उप मंत्री– श्री सच्चिदानन्द मौर्य, ५. कोषाध्यक्ष– राम अवतान शर्मा, ६. संरक्षक– श्री रामधनी यादव एवं अन्तरंग सदस्य निर्वाचित हुए।

डा० जयप्रकाश भारती–निर्वाचन अधिकारी
आ.स.असुख रेलवे कालोनी वेद मंदिर–गोरखपुर

शोक समाचार

आर्य समाज नगरा, झांसी के पूर्व प्रधान स्व० श्री हरी सिंह जी के पौत्र तथा वर्तमान प्रधान जिलापसभा तथा आर्य समाज नगरा–झांसी श्री राजेन्द्र सिंह यादव के अनुज श्री योगेन्द्र कुमार यादव की पत्नी श्रीमती जया यादव का ४२ वर्ष की अल्पायु में ०२ अप्रैल २०१८ को दुःखद निधन हो गया।

परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सदगति प्रदान करें और परिवारीजनों को यह असहनीय दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें। –वेदारी लाल आर्य

निर्वाचन

1. जिला आर्य प्रतिनिधि सभा सहारन पुर–

प्रधान– देवेन्द्र कुमार, मन्त्री– अवनीश सहेला आर्य, कोषाध्यक्ष– विकास धीमान।

2. जिला आर्य प्रतिनिधि सभा गांधी नगर, बस्ती–

प्रधान– उदय भान आर्य, मन्त्री– मुरलीधर भारती आर्य, कोषाध्यक्ष– बृजकिशोर आर्य, पुस्तकालयाध्यक्ष– संतमिलन चौधरी।

3. आर्य समाज नामनेर आगरा–

आर्य समाज नामनेर आगरा का वार्षिक उत्सव (१११वाँ) जिला आर्य सभा के तत्वावधान में बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ तीन चरणों में मनाया गया, जिसका समापन दिनांक २२.४.२०१८ दिन रविवार को हुआ।

प्रधान– श्री प्रमोद आर्य, मंत्री– रामवीर सिंह वर्मा, कोषाध्यक्ष– महेन्द्र सिंह।

गुरूकुल दयानन्द कल्याण आश्रम

सा: रायपुर, पो–कुशीआपाल, जि : केन्द्रापडा–754250, ओडीशा

सस्थापक : स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, प्रभात आश्रम मेरठ

गुरूकुल दयानन्द कल्याण आश्रम द्वारा ओडिशा के के आदिवासी प्रभावित क्षेत्रों में स्वामी दयानन्द सरस्वती के कार्य को आप जैसे दानी महानुभावों से कई प्रकार की गतिविधियों का संचालन सफलता पूर्वक किया जा रहा है। यथाः–ऋषि बोधत्सव, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, गुरूदत्त जयन्ती, रामनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी आदि पर्वों पर यज्ञा आदि एवं वेद प्रवचन के माध्यम से जन जागृति के लिए सभाओं का भी आयोजन किया जाता है। वर्तमान में गुरूकुल के ३५ छात्रों को निःशुल्क आर्ष पाठविधि द्वारा शिक्षा दी जा रही है। सिसे कि वह भारतीय संस्कृति एवं आर्य समाज के प्रचार–प्रसार हेतु अपना जीवन समर्पित कर सके। ग्रामीण महिलओं के विकास हेतु दयानन्द सिलाई शिक्षाकेन्द्र द्वारा सिलाई प्रशिक्षण दी जाती है एवं प्रति रविवार जन कल्याण हेतु गुरूकुल में निःशुल्क होमोपैथिक चिकित्सा भी की जाती है एवं वृहद् यज्ञ का भी आयोजन कराया जाता है तथा प्रतिदिन प्रातः ५–७ से बजे तक शारीरिक विकास हेतु ग्रामीण जनों को निःशुल्क योग प्राणायाम ध्यान आदि की शिक्षा दी जाती है। बाढ़ से पीड़ित स्थानों पर जाकर लोगों की सहायता एवं यज्ञ के माध्यम से पर्यावरण शुद्धि का अभियान चलाया जाता है। इस आश्रम के सहयोग से जाजपुर जिला में एक गुरूकुल सुप्रभात आश्रम कार्य चल रहा है। पूज्या गौ माता कि दयनीय दुर्दशा को देखकर गायों के सेवार्थ एक आदर्श गौशाला के निर्माण की योजना है। आप सभी धर्मप्रेमी दारी महानुभावों से निम्न रूप में सहयोग कि आवश्यकता है। जिससे भारतीय संस्कृति को तोड़ने वाले षड्यंत्र यथा इसाई मिसनरियों द्वारा प्रचारित उस धर्मान्तरण के कार्य को रोक जा सके एवं स्वामी दयानन्द जी के द्वारा प्रतिपादित वेद की ज्ञान गंगा उस क्षेत्र में पुनः प्रभावित हो सके।

गुरूकुल को दिया हुआ दान कल्याण आश्रम स्टेट बैंक के खाता संख्याः ३०४६०१२७१६७ए प्थ्रौण ब्वकमरू ००००११२ अथवा इलाहाबाद बैंक के खाता संख्याः २०६२८२७४६५२ए प्थ्रौण ब्वकमरू ।स्स।०२११६६६ में धन दान करके आप दूभाष संख्या ६६३८१७५८१६ पर सूचित करने की कृपा करें। जिससे की आपके पंजिका रसीद देने में सुविधा हो सके।

प्रभात चन्द्र साहू
प्रधान जी

डा. प्रताप चन्द्र लेकां
कोषाध्यक्ष

सुदर्शन शास्त्री जी
मंत्री जी/ संचालक

आत्मरक्षा एवं चरित्र निर्माण शिबिर

दि. २ मे ते १० मे २०१८

: स्थळ :

ओंकार विद्यालय प्रज्ञापुरी

बंजारवाडी रोड, शरणापुर फाटा, औरंगाबाद

संपर्क : सौ. अंजु माने मो. ९१६८४८००६२ ,

श्री. बालाजी नरवडे मो. ९८२३२५१२७३

प्रवेश पात्रता : किमान १४ वर्ष पूर्ण

सहभागीता शुल्क : ३५०/– रु फक्त

*** संयोजक ***

आर्य समाज, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

गारखेडा परिसर

आओ, चलें! आर्यों के तीर्थस्थल ।। ओ३म् ।। आओ, चलें! गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल

आर्यपुरम्, दून वाटिका, भाग-२, पौन्धा देहरादून (उत्तराखण्ड) का

वार्षिकमहोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह

1,2 एवं 3 जून 2018, शुक्रवार, शनिवार और रविवार को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है

स्वाध्याय शिविर
आचार्य - डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)
28 मई से 31 मई तक

आप इष्ट मित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं

बालसंस्कार एवं प्रवेश-परीक्षा शिविर
निर्देशन - आचार्य चन्द्रभूषण
4 जून से 10 जून तक

www.pranwanand.org | arsh.jyoti@yahoo.in | gurukulpoundha | 09411106104, 08810005096, 09411310530

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग सभा द्वारा 22 अप्रैल 2018 को सम्पन्न बैठक की झलकियां

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।